met the concerned South-Central Railway officials, this fact was brought to their notice. Still no action was taken by the South-Central Railways authorities.

The Press clippings indicate the persons involved in getting the contracts on a priority treatment and the audit objection to it. It is a glaring example mentioned in the Press that in the Londa Road-Kottur section of the South-Central Railway, ballast work was assigned at Rs. 350 per cubic metre which is very high compared to a similar work executed previously at Hospet at Rs. 168/- per cubic metre. This kind of high rate was offered even at places where no such work was needed. Some qualified contractors were kept away from these works. I charge the South-Central Railway with favouritism and corruption.

The audit reports also objected to the way the South-Central Railway was offering works to a few, selected contractors with more margins and accepting the losses. Avoiding the open tender system and deviating from the Indian engineering law by the South-Central Railway need to be probed by the C.B.I.

Thank you very much, Madam. ... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: It was his maiden speech. So he did not know what should be discussed in the House. Next time he will know it.

SHRI S. JAIPAL REDDY: (Andhra Pradesh): Madam, all the same, he has raised a very relevant and important matter.

श्री दिग्विजय सिंह (बिहार) : मैडम, एसोसिएशन करने की इजाजत तो दीजिए ।

उपसभापति : नहीं, नहीं । आपने टेंडर नहीं किया उसका । आप पहले टेंडर सबमिट करिए ऐसोसिएशन करने का तब मैं आपको ऐलाऊ करूंगी ।

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam Mr. Mohan Babu, though it is his maiden intervention has made a very important point about the illegal railway contracts.

RE: REPORTED THREAT TO LIFE OF FILM ACTRESS, MISS MANISHA KOIRALA AND BOMB ATTACK ON FILM DIRECTOR, SHRI MANI RATNAM

श्री सैयद सिब्ते रजी (उत्तर प्रदेश) : मैडम, आपकी अनुमति से मैं सदन का ध्यान इस वक्त बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे की तरफ दिलाना चाहूंगा । आज हमारी फिल्मों के अदंर जिस तरह से हिंसा और सेक्स का प्रदर्शन हो रहा है, उससे हमारा हर परिवार, देश का पूरा समाज जो है, वह किसी न किसी तरह से प्रभावित हो रहा है । फिल्मों में हिंसा हो रही है , उसके बारे में हम लोग रोज यहां सवाल उठाते हैं और जब भी मौका होता है, उस पर हम चर्चा करते हैं और जब भी मौका होता है, उस पर हम चर्चा करते हैं लेकिन दुख की बात है कि जब आज हिंसा करने वाले चाहे वे सामाजिक तत्व हों या किसी और तरह के माफिया गिरोह के लोग हो, उनके खिलाफ जब कोई फिल्म बनाई जाती है तो फिल्म बनाने के जो प्रोड्यूसर और डायरेक्टर है,उन के ऊपर जानलेवा हमले होते हैं । मैं सदन का ध्यान मणिरत्नम जिन्होंने अभी "बॉम्बे" फिल्म बनाई है जिसके अंदर साम्प्रदायिक सौहार्द के बारे में बहुत ज्यादा ध्यान दिया गया है, उन पर कुछ दिन पहले मद्रास बम के जरिए हमला किया गया और उनकी जान लेने की कोशिश की गई । खुशी की बात है कि उनकी जान बच गई लेकिन वे उसमें काफी बुरी तरह से घायल भी हुए ।

मैडम, आप जानती हैं कि सिनेमा का योगदान हमारे सामाजिक जीवन में बहुत ज्यादा है लेकिन इस तरह से जिस तरह से हिंसा फिल्मों के अदंर बढ़ती जा रही है, वह भी कोई बहुत अच्छी बात नहीं है । जो अभी मणिरत्नम जी के ऊपर हुआ है, वह काफी निन्दनीय है, और मैं उसकी भर्त्सना करता हूं लेकिन उसी के साथ –साथ फिल्मों के अदंर सेन्सेशन और जज्बाती कैफियत, हैजानी कैफियत पैदा करके फिल्म चलाने का जो एक ट्रेंड पैदा हुआ है, उसके ऊपर भी मैं अपनी आलोचना प्रकट करना चाहता हूं कि अभी कुछ दिन पहले आप जानती हैं, कि मनीषा कोइराला जो एक अच्छी एक्ट्रेस हैं, उन पर भी जानलेवा हमला करनी की धमकी दी गई थी लेकिन किस तरह से उनका व्यापारीकरण किया गया है उस धमकी से फायदा उठाने के सिलसिले में कि एक अखबार के अंदर एक फिल्म का जिस तरह से एक ऐडवटाईजमेंट प्रकाशित किया गया है, वह बहुत ही आपत्तिजनक हैं और मनीषा कोइराला जो कि एक बहुत

ही प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं, उनके मर जाने की खबर से पूरे देश के अदंर एक सेन्सेशनल फैली । और मेरा कहना यह है, मैं कोई पब्लिसिटी नहीं दे रहा हूं कोर्ट ने भी उसकी तरफ तवज्जों दी है। मैं कहना चाहूंगा कि आज हमारे जो फिल्म निर्माता है, जो डिस्ट्रीब्यूटर हैं, उन्हें उनकी सामाजिक जिम्मेदारी को निभाना चाहिए । आज जिस प्रकार से एडवरटिजमेंट किये जाते हैं, उसके कारण देश में कोई भी दुर्घटना हो सकती है । आज समाज को एक नेतृत्व की जरूरत है । मैं समझता हूं कि कलाकार और फिल्म की संस्कृति समाज को एक अच्छा नेतृत्व दे सकते हैं । इस बारे में मैं सदन के माध्यम से और आपके माध्यम से अपील करना चाहूंगा कि उन ताकतों के खिलाफ जो राज्य सरकारें हैं, उन्हें जो ऐक्शन लेना हैं, वह तो लेगी ही, लेकिन खुद ही फिल्म के निर्माताओं और डिस्ट्रीब्यूटर्स जो अपनी आचार-सहिता को बनाना चाहिए और उनकी एडवरटिजमेंट की वजह से देश में कोई ऐसी दुर्घटना न हो जाए, उसकी तरह उन्हें खुद ही ध्यान देना चाहिए। मैं समझता हूं कि यदि संयम से काम किया जाए तभी इस देश को हम यब मिलकर उबार सकते हैं और आज जो हिंसा की प्रवृत्ति पैदा हो रही है, जिसकी वजह से हमारा सामाजिक स्तर गिर रहा है, उसको रोकने की आवश्यकता है । उसके लिए हमें खुद ही अपने दिल में झांककर और सही आचार-सहिंता को बनाकर फिल्म के निर्माताओं को आगे बढ़ना चाहिए ।

†سید سبط رضی "اتر پردیش":

میڈم آپکی انومتی سے میں سدن کا دھیان اسوقت بہت ہی مہتو پورن مدے کی طرف دلانا چاہونگا۔ آج ہماری فلموں کے اندر جس طرح سے ہنسا اور سیکس کا پردرشن ہو رہا ہے۔ اس سے ہمارا ہر پریوار۔ دیش کا پورا سماج جو ہے۔ وہ کسی نہ کسی طرح سے پربھاوت ہو رہا ہے۔فلموں میں ہنسا ہو رہی ہے۔ اسکے بارے میں ہم لوگ روز یہاں سوال اٹھاتے ہیں اور جب بھی موقع ہوتا ہے اس پر ہم چرچا کرتے ہیں لیکن دکھ کی بات ہے کہ جب

آج ہنسا کرنے والے چاہے وہ سماجک تتو ہوں یا کسی اور طرح کے مافیا گروہ کے لوگ ہوں۔ انکے خلاف جب کوئی فلم بنائی جاتی ہے تو فلم بنانے کے جو پرڈیوسر اور ڈائیریکٹر ہیں، انکے اوپر جان لیوا حملے ہوتے ہیں۔ میں سدن کا دھیان "منی رتنم" جنہوں نے ابھی "بامبے" فلم بنائی ہے جسکے اندر سامپردایک سدھار کے بارے میں بہت زیادہ دھیان دیا گیا ہے۔ ان پر کچھ دن پہلے مدد اس میں بم کے ذریعے حملہ کیا گیا اور انکی جان لینے کی کوشش کی گئی۔ خوشی کی بات ہے کہ انکی جان بچ گئی لیکن وہ اسمیں کافی بری طرح سے گھائل بھی ہوئے۔

میڈم آپ جانتی ہیں کہ سنیا کا یوگدان ہمارے ساماجک جیون میں بہت زیادہ ہے لیکن اس طرح سے جس طرح سے ہنسا فلموں کے اندر بڑھتی جا رہی ہے۔ وہ بھی کچھ اچھی بات نہیں ہے۔ جو ابھی منی رتنم جی پر حملہ ہوا ہے۔وہ کافی نندنئے ہے اور میں اسکی بھوشناکرتا ہوں لیکن اسکے ساتھ ساتھ فلموں کے اندر سینیشن اور جزباتی کیفیت۔ حیجانی کیفیت پیدا کر کے فلم چلانے کا جو ایک ٹرینڈ پیدا ہوا ہے۔ اسکے اوپر بھی میں اپنی الوچنا پرکٹ کرنا چاہتا ہوں کہ ابھی کچھ دن پہلے آپ جانتی ہیں کہ منیشا کوئیرالا جو ایک اچھی ایکٹریس ہیں۔ ان پر بھی جان لیوا حملہ کرنے کی دھمکی دی

†[]Transliteration in Arabic Script.

جائے۔اسکی طرف انھیں خود ہی دھیان دینا چاہئے۔میں سمجھتا ہوں کہ یدی سنیم سے کم کیا جائے تبھی اس دیش کو ہم سب ملکر ابار سکتے ہیں۔ اور آج جوھنسا کی پرورتی پیدا ہو رہی ہے۔ جس کی وجہ سے ہمارا سماجک استرگر رہا ہے۔ اسکو روکنے کی آوشیکتا ہے اس کے لئے ہمیں خود ہی اپنے دل میں جھانک کر اور صحیح آچار سنہیتا کو بناکر فلم کے نرماتاؤں کو آگے بڑھنا چاہئے۔

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली) : महोदया मैं इसमें असोसिएट करना चाहता हूं । यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है ।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S.B. CHAVAN): Madam, the issue which was raised by my esteemed friend was also brought to may notice. I propose to write to both the State Governments to provide them security so that they should not face any kind of danger to their lives.

RE: EXPLOSIVE SITUATION IN VARANASI

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : महोदया, उत्तर प्रदेश में एक शहर है, बनारस । उसको काशी भी कहा जाता है । वहां एक काशी विश्वनाथ गली है। काशी विश्वनाथ गली बहुत पतली गली है लेकिन वहां पर एक धार्मिक स्थल है और वह धार्मिक स्थल को हमारे साम्प्रदायिक सदभाव का प्रतीक है, उसमें एक धार्मिक स्थल को कहा जाता है , काशी विश्वनाथ मंदिर । यह मंदिर हिन्दू धर्म का प्रतीक है और दूसरा धार्मिक स्थल है, ज्ञानव्यापी मस्जिद, जो इस्लाम धर्म से संबंधित हैं ।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : मंदिर तोड़कर बनाया गया है.....(**व्यवधान**)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : आप सुन लीजिए, हमने तो आपका नाम लिया ही नहीं । यह तो

گئی تھی لیکن کس طرح سے اسکا وپاپاریکرن کیا گیا ہے۔ ا س دھمکی سے فائدہ اٹھانے کے سلسلہ میں کہ ایک اخبار کے اندر ایک فلم کا جسطرح سے ایک ایڈورٹائزمنٹ پرکاشت کیا گیا ہے۔ وہ بہت ہی اپتی جنک ہے اور منیشیا کوئیرالا جو کہ ایک بہت ہی پرسدھ ابھینیتری ہیں۔ انکے مرجانے کی خبر سے پورے دیش کے اندر ایک سینشنل پھیلی۔ اور میرا کہنا یہ ہے کہ میں کوئی پبلسٹی نہیں دے رہا ہوں کورٹ نے بھی اس کی طرف توجہ دی ہے۔ میں کہنا چاہونگا کہ آج ہمارے جو فلم نرماتا ہیں۔ جو ڈسٹری بیوٹر' ہیں انھیں انکی ساماجک ذمہداری کو نبھانا چاہئے۔ آج جس پرکار سے ایڈورٹائزمنٹ کئے جاتے ہیں۔ اسکے کارن دیش میں کوئی بھی درگھٹنا ہو سکتی ہے۔ آج سماج کو ایک نیتو توکی ضرورت ہے۔میں سمجھتا ہوں کہ کلاکار اور ختم کی سنسکرتی سماج کو ایک اچھا نیترتو دے سکتے ہیں۔ اس بارے میں سدن کے مادھیم سے اپیل کرنا چاہونگا کہ ان طاقتوں کے خلاف جو راجیہ سرکاریں ہیں۔ انھیں جو ایکشن لینا ہے۔ وہ تو لینگی ہی۔ لیکن خود ہی فلم کے نرماتاؤں کو اور ڈسٹری بیوٹرس کو اپنی آچار سنہیتا کو بنانا چاہئے۔ اور انکی ایڈورٹائزمنٹ کی وجہ سے دیش میں کوئی ایسی درگھٹنا نہ ہو

*[]Transliteration in Arabic Script.